D-I RB Hin / D-I P-II

डा. सुजाता गुप्ता
हिंदी विभाग
स्नातक डिग्री १ पत्र २

भक्तिकाल की पूर्व पीठिका

आचार्य शुक्ल ने हिंदी साहित्य के भक्तिकाल की समय सीमा 1375 वि.सं. 1700 वि.(1318-1643 ई.) तक मानी है। भक्ति का सर्वप्रथम प्रयोग 'श्वेताश्वतर उपनिषद्' में मिलता है। दक्षिण भारत में आलवार संतों की परंपरा 7वीं शती से चली आ रही है। 'आलवार' भक्त वैष्णवों का तमिल नाम है। आलवार संतों ने आध्यात्मिक विचार वेद, उपनिषद् एवं गीता से ग्रहण किए। इनकी संख्या 12 मानी जाती है तथा इनके पदों का संकलन 'दिव्य प्रबन्धम्' नाम से किया जाता है।

आचार्य शुक्ल ने भक्ति आंदोलन के सूत्रपात के लिए तात्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों को उत्तरदायी माना है। उनके अनुसार, "देश में मुसलमानों का राज्य प्रतिष्ठित हो जाने पर हिंदू जनता के हृदय में गौरव, गर्व और उत्साह के लिए वह अवकाश न रह गया। ...... अपने पौरुष से हताश जाति के लिए भगवान की शक्ति और करुणा की ओर ध्यान ले जाने के अतिरिक्त दूसरा मार्ग ही क्या था।"

नाथों, बौद्धों, सिद्धों एवं योगियों की बानियों में हृदय के प्रकृत भावों - भक्ति, प्रेम आदि का कोई स्थान न था। शास्त्रज्ञ विद्वानों पर इनकी बानियों का कोई प्रभाव न पड़ा और वे ब्रह्मसूत्रों, उपनिषदों एवं गीता आदि पर भाष्य लिखकर परंपरागत भक्ति मार्ग के सिद्धांत पक्ष को विकसित करते रहे, किंतु अशिक्षित जनता इनके प्रभाव में अवश्य आने लगी।

भक्ति का सूत्रपात मूलतः दक्षिण भारत में हुआ इस संबंध में कहा गया है — "भक्ति द्राविड़ ऊपजी लाए रामानन्द" भक्ति का जो स्रोत दक्षिण भारत से धीरे-धीरे उत्तर भारत की जनता के क्षेत्र (हृदय में) फैलने का पूरा स्थान मिला। रामानुजाचार्य ने शास्त्रीय पद्धति से सगुण भक्ति का निरूपण किया और जनता इस भक्ति मार्ग की ओर आकृष्ट होती गयी।

भक्ति आंदोलन की पृष्ठभूमि में इन आचार्यों का भी विशेष योगदान है जिन्होंने विभिन्न सिद्धांतों (वादों) का प्रतिपादन किया। इनमें प्रमुख हैं — मध्वाचार्य (13वीं शती), जयदेव (13वीं शती), रामानन्द (15वीं शती), वल्लभाचार्य (16वीं शती) और नामदेव (13-14वीं शती)।

मध्वाचार्य

इन्होंने गुजरात में द्वैतवादी वैष्णव सम्प्रदाय का प्रवर्तन किया तो जयदेव ने पूर्वी भारत में कृष्ण प्रेम के गीत गाए जिनका अनुसरण बाद में विद्यापति ने अपनी पदावली में किया है। रामानंद प्रसिद्ध वैष्णव रामानुजाचार्य की शिष्य परंपरा में आते हैं, जिन्होंने रामानन्दी सम्प्रदाय चलाया और विष्णु के अवतार राम की उपासना पर बल दिया। कबीर इन्हीं रामानन्द के शिष्य थे यद्यपि वे निर्गुणोपासक संत कवि हैं।

वल्लभाचार्य ने 'शुद्धाद्वैतवाद' एवं पुष्टिमार्ग पर बल देते हुए आचार्य विष्णु स्वामी की परंपरा का अनुसरण किया तथा कृष्ण भक्ति के प्रचार-प्रसार में विशेष योगदान दिया। आपके पुत्र गोस्वामी विट्ठलनाथ ने अष्ट छाप की स्थापना की जिसमें आठ कृष्णभक्त हिंदी कवियों को दीक्षित किया।

आगे जारी है.....